Indian e-Journal on Teacher Education (IEJTE)
Bi-Monthly e-Journal (Peer Reviewed)
ISSN 2320 –7566

भारत में मुसहर समुदाय की सामाजिक-शैक्षिक स्थिति और उनका समावेशन

सुमन पाल

रिसर्च स्कॉलर,
शिक्षा विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर

प्रोफेसर,
शिक्षा विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

==========

प्रस्तावना:

भारत में अनुसूचित जाति की संकल्पना आज़ादी से पहले की है। वर्ष-1931 की जनगणना के आधार पर साइमन कमीशन ने सभी अछूत जातियों या समाज में सबसे निचले पायदान पर रह रही जातियों के समूह को 1935 में अनुसूचित जाति नाम दिया था। आज़ादी के बाद भारतीय संविधान अनुच्छेद-342 के अंतर्गत अनुसूचित जाति की सूची से नई जातियों को जोड़ने या पुरानी जाति को हटाने की शक्ति प्रदान करता है (प्रसाद एवं यादव, 2021)। सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय, भारत सरकार की रिपोर्ट- हैंडबुक ऑन सोशल वेलफ़ेयर स्टेटिस्टिक्स-2021 के अनुसार 26 अक्टूबर, 2017 तक भारतीय संविधान के अनुच्छेद-341 में अनुसूचित जाति के अंतर्गत सम्मिलित समस्त जातियों की संख्या कुल 1284 है। उन्हीं 1284 अनुसूचित जातियों के समूह को महात्मा गांधी जी ने 'हरिजन' नाम दिया था। भारतीय वर्ण व्यवस्था में अनुसूचित जातियों को शूद्र एवं अति शूद्र भी कहा गया है। अनुसूचित जतियों के लिए एक बहुत ही प्रचलित शब्दावली है- दलित। दलित शब्द का प्रयोग भारतीय समाज में दबे-कुचले, वंचित और हाशिए पर रहने वाली जातियों के लिए किया जाता है। दरअसल दलित जातियाँ सामाजिक संरचना, कर्म आधारित वर्ण-व्यवस्था का जाति आधारित हो जाने और शैक्षिक-आर्थिक स्थिति इत्यादि कारणों से भेदभाव की शिकार रही हैं और उन्हें पूर्व में अछूत कहा जाता था। वर्तमान समय में भी अनुसूचित जातियों की स्थिति में बहुत सुधार नहीं हो पाया है। उन्हीं 1284 अनुसूचित जातियों में से एक अत्यधिक दबी-कुचली और मुख्य समाज से कटी हुई जाति है-मुसहर। मुसहर जाति सामाजिक संरचना के आधार पर एक ऐसे समूह का निर्माण करती है, जो अन्य समाज से कटा हुआ हाशिये पर है। यदि भारत के संदर्भ में देखा जाय तो मुसहर जाति का निवास अधिकांशतः उत्तर भारत में पाया जाता

है। मुसहर जाति को मुख्य समाज में मूस पकड़ने वाली जाति के रूप में जाना-पहचाना जाता है। वास्तव में मुसर एक ऐसी जाती है, जो मूस पकड़कर उसे अपने भोजन में खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयोग करती है। 'मुसहरों को सदा, मांझी, मंडल, भुईया, रिक्यासन, ऋषिदेव, बलाकुमुनी, दैयतानिया, कसमेटा, वनमानुष जैसे विभिन्न नामों से भी संबोधित किया जाता है' (कुमार, 2017)। मुसहरों को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में वरुणा नदी के तटीय इलाकों में वनवासी एवं वनों का राजा भी कहा जाता है। मुसहर समाज मुख्य रूप से मध्य और पूर्वी उत्तर प्रदेश के जिलों में फैले हैं और वे पत्तल बनाने तथा मिट्टी काटने में बेहद कुशल होते हैं (जोशी एवं कुमार, 2022)। मुसहर समाज की अपनी खानपान, रहन-सहन की स्थिति और उनकी लोक परंपराएं भी उन्हें विशिष्ट बनाती हैं। मुसहरों की सामाजिक-शैक्षिक स्थिति एवं उनकी शैक्षिक आकांक्षा को समझने के लिए बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। मुसहरों का कोई अपना लिखित धर्म ग्रंथ नहीं है। उनकी परंपराएं भी केवल मौखिक अभिव्यक्ति मात्र हैं, जो सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी केवल सुनकर और अनुकरण के माध्यम से चली आ रही हैं। मुसहर समुदाय की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां अनुसूचित जाति (SC) वर्ग की अन्य जातियों की तुलना में बहुत ही निम्न स्तर की है। आज भी मुसहर जाति के साथ अस्पृश्यता जैसी भावना बनी हुई है। समाज में उन्हें आज भी उतनी स्वीकृति नहीं प्राप्त हुई है, जितनी कि अन्य जातियों को।

शोध का औचित्य:

मुसहर जाति मुख्य समाज से कटा हुआ एक सजातीय समूह के रूप में जीवन व्यतीत करती है। उस समूह की एक सुव्यवस्थित एवं सुनिश्चित जीवन जीने की परिपाटी है। उस सजातीय समूह का अपना एक अद्वितीय जीवन दर्शन और जीवन संस्कृति होती है। उनकी संस्कृति एवं जीवन दर्शन उनके सम्पूर्ण जीवन को बहुत गहराई तक प्रभावित करता है। उनके दैनंदिन एवं कुछ विशिष्ट दिनों की कार्यप्रणाली उसी अद्वितीय संस्कृति एवं अद्वितीय सामाजिक रीति-रिवाज़ का अनुसरण करके ही सम्पन्न होती है। उनकी जीवन जीने की प्रणाली निःसन्देह उन्हें एक विशिष्ट समूह बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। यद्यपि सभी प्रकार के समाज की एक ख़ास संरचना एवं जीवन जीने की प्रणाली होती है तथापि अनुसूचित जाति के अन्य सजातीय समूह समाज से उतने कटे हुए नहीं होते हैं जितने कि मुसहर जाति का सजातीय समूह। मुसहर समुदाय विभिन्न प्रकार की सरकारी अनुदाओं एवं सहयोग के बावजूद आज भी अत्यधिक दबी-कुचली जातीय संरचना से बाहर नहीं निकाल पाई है। उनकी सामाजिक संरचना, विभिन्न प्रकार की रूढ़ियाँ एवं शिक्षा की कमी ने उनके सामाजिक-शैक्षिक विकास को रोक रही है। अभी तक वे अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियों के चंगुल से निकल नहीं पाये हैं। उनमें आज भी उस तरह का आत्मविश्वास विकसित नहीं हो पाया है, जो उन्हें सामाजिक संरचना में ऊपर उठने का

साहस प्रदान कर सके। इसका एक सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक कारण- शिक्षा तक उनकी समुचित पहुँच न हो पाना है। वह समुदाय आज भी यदि बहुत निम्न स्तर का जीवन यापन कर रहा है तो भी इसका एक मुख्य एवं सबसे मजबूत कारण उनका शैक्षिक विकास न होना ही है। उत्तर प्रदेश की राजनीतिक परिदृश्य के साथ ही साथ सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य में भी मुसहरों का सामुदायिक योगदान आज भी नगण्य है।

सामाजिक-राजनैतिक प्रतिनिधित्व के मामले में उनकी सहभागिता तो लगभग शून्य है। उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा नहीं मिल पाया है। सम्पूर्ण समाज की बात को यदि थोड़ी देर के लिए अलग कर दिया जाय और केवल अनुसूचित जाति वर्ग का विश्लेषण किया जाय तो प्राप्त होता है कि अनुसूचित जाति वर्ग की अन्य जातियों की तुलना में मुसहर जाति अपने अनुसूचित वर्ग में भी सबसे निचले पायदान पर ही है। कुछ अनुसूचित जातियों यथा-चमार, गोंड, पासी इत्यादि ने शिक्षा को अपने विकास का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को काफ़ी हद तक ठीक कर लिया है। अब सवाल यह उठता है कि आखिर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभिन्न राज्य सरकारों और केंद्र सरकारों के द्वारा अनुसूचित जाति के लिए किए गए सराहनीय प्रयासों के बावजूद मुसहर जाति आखिर आज भी न केवल मुख्य समाज से बल्कि अपने अनुसूचित जाति वर्ग वाले समूह से भी कटी हुई क्यों है? मुसहर जाति अन्य समाज के साथ मिलकर अपना विकास एक अपेक्षित स्तर तक भी नहीं कर पा रही है तो इसका कारण क्या है? आखिर ऐसी कौन सी सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ हैं, जो उन्हें अन्य जातियों की तुलना में आज भी पीछे धकेल रही हैं? मुसहर जाति की वर्तमान शैक्षिक स्थिति क्या है? मुसहर समुदाय अपने सामाजिक ज्ञान का निर्माण किस प्रकार से करता है? ये कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण सवाल हैं, जिनका उत्तर ढूँढना बेहद आवश्यक है।

भारत में मुसहर समुदाय की जनसंख्या:

भारत में मुसहर जाति मुख्यतः बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, और त्रिपुरा जैसे राज्यों में ही निवास करती है। मुसहरों की सबसे अधिक संख्या बिहार राज्य में है और दूसरे स्थान पर इनकी संख्या उत्तर प्रदेश में है। बिहार राज्य में तो मुसहर समुदाय को महादलित की श्रेणी में रखा है; जबकि उत्तर प्रदेश में मुसहर जाति आज भी अनुसूचित जाति समूह में ही सम्मिलित है। विभिन्न राज्यों में सम्पूर्ण एवं अनुसूचित जाति के सापेक्ष मुसहरों की जनसंख्या को अधोलिखित रूप से तालिका-प्रथम में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका-प्रथम: सम्पूर्ण, अनुसूचित एवं मुसहर जाति की जनसंख्या

राज्य	सम्पूर्ण जनसंख्या	अनुसूचित जाति		मुसहर जाति की जनसंख्या		
		जनसंख्या	प्रतिशत	पु.	म.	कुल
बिहार	104099452	16567325	15.91	1407557	1317557	**2725114**
झारखंड	32988134	3985644	12.08	27251	25845	**53096**
उड़ीसा	41974218	7188463	17.13	37	20	**57**
त्रिपुरा	3673917	654918	17.83	178	149	**327**
उत्तर प्रदेश	**199812341**	**41357608**	**20.70**	**133149**	**123986**	**257135**
उत्तराखंड	10086292	1892516	18.76	397	321	**718**
बंगाल	91276115	21463270	23.51	10708	10241	**20949**
भारत	**1210854977**	**201378372**	**16.63**	**1579277**	**1478119**	**3057396**

स्रोत: हैंडबुक ऑफ सोशल वेलफ़ेयर स्टेटिस्टिक्स 2021, सामाजिक न्याय मंत्रालय, भारत सरकार पेज: 29 व 61-114.

उपरोक्त तालिका-प्रथम के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बिहार की सम्पूर्ण जनसंख्या 104099452, जिसमें से अनुसूचित जाति की जनसंख्या 16567325 (15.91%) है। बिहार में मुसहर समुदाय की कुल जनसंख्या 2725114 है, जिसमें पुरुष मुसहर की जनसंख्या 1407557एवं महिला मुसहर की जनसंख्या 1317557 है। बिहार में मुसहर समुदाय की सर्वाधिक जनसंख्या है। उत्तर प्रदेश की समस्त जनसंख्या **199812341** की तुलना में अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या **41357608** है, जोकि मुसहर जाति निवास करने वाले सभी राज्यों में सबसे अधिक है। भारत में अनुसूचित जाति की जनसंख्या **16.63%** की तुलना में उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति का प्रतिशत **20.70 %** है। उत्तर प्रदेश में कुल जनसंख्या के सापेक्ष मुसहर जाति की कुल जनसंख्या **257135** है। नारायण (2018) ने बताया है कि 1981 कि जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में मुसहर जाति की आबादी 126088 थी, जिन्हें वनमानुस, बंजारा और गोनारे भी कहा जाता था। अनुसूचित जाति का शिक्षा के प्रति झुकाव अन्य जातियों की तुलना में बेहद कम है।

मुसहरों का सामाजिक-शैक्षिक परिदृश्य:

मुसहरों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति अन्य अनुसूचित जातियों की तुलना में आज भी बहुत गिरी हुई है। बिना शिक्षा का स्तर ऊंचा किए मुसहरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊंचा कर पाना और उनकी सामाजिक समावेशिता को स्थापित कर पाना संभव नहीं है। शिक्षा को एक सामाजिक सुधार और आर्थिक विकास के एक उपकरण के रूप में स्वीकार करते हुए मुसहरों के लिए शिक्षा व्यवस्था हेतु अतिरिक्त प्रयास करने किया जाना चाहिए। 'शिक्षा तकनीकी विकास लाने के साथ-साथ संपूर्ण दुनिया से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है इसके अलावा शिक्षा को स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और समान अवसरों तथा सामाजिक मूल्यों पर आधारित एक बेहतर सामाजिक परिवर्तन के लिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है' (राधा कृष्ण और कुमारी 1989)।

वास्तव में 'शिक्षा व्यक्ति को न केवल दक्षता स्तर बढ़ाने की दिशा में कौशल विकसित करने में सक्षम बनाती है बल्कि उसके व्यक्तित्व को सकारात्मक रूप से बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा महत्वपूर्ण रूप से मदद करती है' (पासवान और जयदेव 2002)। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था होने के बावजूद मुसहरों की राजनीतिक सहभागिता केवल और केवल वोट देने तक सीमित है। वे मुख्य समाज से आज भी कटे हुए हैं। सामाजिक विकास और सामाजिक समावेश के लिए भी शैक्षणिक संस्थान सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं। शैक्षणिक संस्थान तक मुसहरों की पहुंच अभी भी ठीक ढंग से सुनिश्चित नहीं हो पाई है। क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। उनके पास खेती के लिए अपनी जमीन नहीं है। थोड़ा बहुत पट्टे वाली जमीन है भी तो केवल छप्पर बनाकर रहने भर की। मुसहर जाति दैनिक मजदूरी करके अपने पेट को पालने का काम करती है। विभिन्न राज्यों में मुसहरों की जनसंख्या एवं साक्षरता का विवरण अधोलिखित तालिका-द्वितीय में प्रस्तुत किया गया है-

तालिका-द्वितीय: भारत में मुसहर जाति की जनसंख्या एवं साक्षरता

क्रमांक	राज्य	जनसंख्या			साक्षरता (प्रतिशत में)		
		पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल
1.	बिहार	1407557	1317557	**2725114**	34.60	22.90	**29.00**
2.	झारखंड	27251	25845	**53096**	41.30	23.70	**32.80**
3.	उड़ीसा	37	20	**57**	44.10	63.20	**50.90**
4.	त्रिपुरा	178	149	**327**	93.80	79.90	**87.40**
5.	उत्तर प्रदेश	133149	123986	**257135**	31.30	16.90	**24.40**
6.	उत्तराखंड	397	321	**718**	56.50	43.50	**50.90**
7.	बंगाल	10708	10241	**20949**	30-30	18.20	**24.40**

स्रोत: हैंडबुक ऑफ सोशल वेलफ़ेयर स्टेटिस्टिक्स 2021, सामाजिक न्याय मंत्रालय, भारत सरकार पेज: 61-114

शहरी क्षेत्र में मुसहरों की जनसंख्या एवं साक्षरता:

विभिन्न राज्यों के शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले मुसहरों की जनसंख्या एवं उनकी साक्षरता का विवरण निम्नलिखित तालिका-तृतीय में प्रस्तुत है-

तालिका-तृतीय: विभिन्न राज्यों के शहरी क्षेत्र में मुसहर जाति की जनसंख्या एवं साक्षरता

क्रमांक	राज्य	जनसंख्या			साक्षरता (प्रतिशत में)		
		पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल
1.	बिहार	48158	45273	**93431**	30.30	20.40	**25.60**
2.	झारखंड	3799	3483	**7282**	56.10	37.80	**47.50**
3.	उड़ीसा	17	16	**33**	73.30	73.30	**73.30**
4.	त्रिपुरा	52	50	**102**	91.50	83.00	**87.20**
5.	उत्तर प्रदेश	4120	3781	**7901**	30.90	19.60	**25.60**
6.	उत्तराखंड	111	86	**197**	54.80	37.70	**47.60**
7.	बंगाल	1789	1728	**3517**	44.90	33.10	**39.20**

स्रोत: हैंडबुक ऑफ सोशल वेलफ़ेयर स्टेटिस्टिक्स 2021, सामाजिक न्याय मंत्रालय, भारत सरकार पेज: 169-222

विभिन्न राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले मुसहरों की जनसंख्या एवं उनकी साक्षरता का विवरण निम्नलिखित तालिका-चतुर्थ में प्रस्तुत है-

तालिका-चतुर्थ: विभिन्न राज्यों के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर जाति की जनसंख्या एवं साक्षरता

क्रमांक	राज्य	जनसंख्या			साक्षरता (प्रतिशत में)		
		पु.	म.	कुल	पु.	म.	कुल
1.	बिहार	1359399	1272284	**2631683**	34.70	23.00	**29.10**
2.	झारखंड	23452	22362	**45814**	38.80	21.40	**30.40**
3.	उड़ीसा	20	04	**24**	21.10	25.00	**21.70**
4.	त्रिपुरा	126	99	**225**	94.70	78.20	**87.50**
5.	उत्तर प्रदेश	129029	120205	**249234**	31.40	16.90	**24.40**
6.	उत्तराखंड	286	235	**521**	57.10	45.40	**52.00**
7.	बंगाल	8919	8513	**17432**	27.20	15.00	**21.30**

स्रोत: हैंडबुक ऑफ सोशल वेलफ़ेयर स्टेटिस्टिक्स 2021, सामाजिक न्याय मंत्रालय, भारत सरकार पेज: 115-168

उपर्युक्त तालिका- द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ के अवलोकन से स्पष्ट है कि बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 34.7%, महिला साक्षरता दर 23% एवं कुल साक्षरता दर 29.1% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 30.3%, महिला साक्षरता दर 20.4% एवं कुल साक्षरता दर 25.6% है; जबकि बिहार के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 34.6%, महिला साक्षरता दर 22.9% एवं कुल साक्षरता दर 29% है। इसी प्रकार झारखंड के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 38.8%, महिला साक्षरता दर 21.4% एवं कुल साक्षरता दर 30.4% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 56.1%, महिला साक्षरता दर 37.8% एवं कुल साक्षरता दर 37.8% है; जबकि झारखंड के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 41.3%, महिला साक्षरता दर 23.7% एवं कुल साक्षरता दर 32.8% है। उड़ीसा के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 21.1%, महिला साक्षरता दर 25% एवं कुल साक्षरता दर 21.7% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 73.3%, महिला साक्षरता दर 73.3% एवं कुल साक्षरता दर 73.3% है; जबकि उड़ीसा के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 44.1%, महिला साक्षरता दर 63.2% एवं कुल साक्षरता दर 50.9% है। त्रिपुरा के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 94.7%, महिला साक्षरता दर 78.2% एवं कुल साक्षरता दर 87.5% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 91.5%, महिला साक्षरता दर 83% एवं कुल साक्षरता दर 87.2% है; जबकि त्रिपुरा के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 93.8%, महिला साक्षरता दर 79.9% एवं कुल साक्षरता दर 87.4% है। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 31.4%, महिला साक्षरता दर 16.9% एवं कुल साक्षरता दर 24.4% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 30.9%, महिला साक्षरता दर 19.6% एवं कुल साक्षरता दर 25.6% है; जबकि उत्तर प्रदेश के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 31.3%, महिला साक्षरता दर 16.9% एवं कुल साक्षरता दर 24.4% है। उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 57.1%, महिला साक्षरता दर 45.4% एवं कुल साक्षरता दर 52% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 54.8%, महिला साक्षरता दर 37.7% एवं कुल साक्षरता दर 47.6% है; जबकि उत्तरखंड के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 56.5%, महिला साक्षरता दर 43.5% एवं कुल साक्षरता दर 50.9% है। पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 27.2%, महिला साक्षरता दर 15% एवं

कुल साक्षरता दर 21.3% है, शहरी क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 44.9%, महिला साक्षरता दर 33.1% एवं कुल साक्षरता दर 39.2% है; जबकि पश्चिम बंगाल के सम्पूर्ण क्षेत्र में मुसहर समुदाय की क्रमशः पुरुष साक्षरता दर 30.3%, महिला साक्षरता दर 18.2% एवं कुल साक्षरता दर 24.4% है। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि मुसहर आबादी वाले सभी सात राज्यों में ग्रामीण-शहरी एवं सम्पूर्ण क्षेत्र की महिला-पुरुष एवं कुल साक्षरता स्तरों में त्रिपुरा की मुसहर साक्षरता सर्वाधिक है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के मुसहर पुरुष की सबसे कम साक्षरता उड़ीसा राज्य में, महिला एवं कुल ग्रामीण स्तर पर मुसहर की सबसे कम साक्षरता दर पश्चिम बंगाल की है। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के मुसहर पुरुष की सबसे कम साक्षरता बिहार राज्य में, महिला मुसहर की सबसे कम साक्षरता उत्तर प्रदेश में तथा कुल शहरी मुसहर समुदाय की साक्षरता के मामले में बिहार एवं उत्तर प्रदेश समान रूप से सबसे कम साक्षरता दर वाले राज्य हैं। सम्पूर्ण क्षेत्र के मामले में मुसहर पुरुष की सबसे कम साक्षरता दर वाला राज्य पश्चिम बंगाल, मुसहर महिला की सबसे कम साक्षरता दर वाला राज्य उत्तर प्रदेश है। सम्पूर्ण क्षेत्र की कुल साक्षरता दर के मामले में सबसे कम साक्षरता दर वाले राज्य समान रूप से उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल हैं।

मुसहर समुदाय का लिंगानुपात ट्रेंड:

1951 की जनगणना के अनुसार भारत का लिंगानुपात 946 जबकि मुसहर समुदाय का लिंगानुपात शून्य है। क्योंकि 1951 की जनगणना में मुसहर समुदाय संबंधित प्रदत्त उपलब्ध नहीं है। दशक 1961 से 2011 तक भारत का लिंगानुपात क्रमशः 941, 930, 934, 926, 933 व 943 है जबकि मुसहर समुदाय का लिंगानुपात क्रमशः 994, 953, 965, 918, 932 व 936 है। उक्त विवरण की तुलना करने पर प्राप्त होता है कि दशक 1961 से 1981 तक मुसहर समुदाय का लिंगानुपात भारत के लिंगानुपात से अधिक रहा है; लेकिन दशक 1991 से 2011 तक मुसहर समुदाय का लिंगानुपात भारत के लिंगानुपात की तुलना में घट गया है। वर्तमान में अद्यतन उपलब्ध जनगणना (2011) के अनुसार मुसहर समुदाय का लिंगानुपात (936), भारत के लिंगानुपात (943) से कम है। यह चिंता का विषय है। आख़िर जैसे-जैसे उनकी जनसंख्या बढ़ रही है, वैसे-वैसे उनका लिंगानुपात कम क्यों होता जा रहा है? इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण मुसहर समुदाय की शैक्षिक स्थिति का बहुत निम्नतर होना है।

निष्कर्ष:

मुसहर समुदाय का सामाजिक-शैक्षिक स्थिति बहुत पिछड़ी है। वे आज भी मुख्य समाज से कटकर जीवन यापन कर रहे हैं। आज़ादी से लेकर अद्यतन (भारतीय जनगणना वर्ष 2011 तक) मुसहर समुदाय की जनसंख्या में तो बहुत अधिक वृद्धि हुई है, लेकिन उनकी शैक्षिक स्थिति में बहुत कम विकास हुआ है। वर्ष 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या में दशकीय वृद्धि दर लगभग 28.80% रही है, जोकि

भारत की वर्तमान दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 17.7% से काफी अधिक है। उनकी शैक्षिक स्थिति में भी सुधार हुआ है, लेकिन सुधार की गति बहुत धीमी है। वर्तमान में उनकी साक्षरता दर लगभग 22% है। लगभग 78% मुसहर समुदाय वर्तमान में निरक्षर है। इसलिए भारत की समावेशी विकास की गति को और अधिक जमीनी झुकाव के साथ तेज होने की जरूरत है।

सन्दर्भ:

- नारायण, बदरी (2018). खंडित आख्यान: भारतीय जनतंत्र में अदृश्य लोग, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली.
- प्रसाद, डी. एवं कुमार, ए. (2018). गुलामगिरी एंड कॉस्ट टुडे: अन इंटरप्रिटेशन. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यु, 5(3), पृष्ठ: 129-132
- कुमार, धर्मेंद्र (2017). मैपिंग मार्जिनलाइजेशन ऑफ कॉस्ट एंड इनक्लूसन ऑफ कॉस्ट: अ स्टडी ऑफ मानपुर विलेज, गया (बिहार). अप्रकाशित एम.फिल. थेसिस, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ सोशल एक्सक्लूशन एंड इंक्लूसिव पॉलिसी, हैदराबाद विश्वविद्यालय.
- प्रसाद, डी. एवं श्रीहरी, जी. (2017). मैपिंग द पॉलिटिक्स ऑफ शौचालय इन दलित लोकलिटीज: अन इन्क्वायरी, कंटेम्प्रेरी वॉइस ऑफ दलित, 9 (1), पृष्ठ: 225-271.
- सिंह, डी. पी. (2016). सोशियो, डेमोग्राफिक कंडीशन ऑफ वन ऑफ द मोस्ट मार्जनलाइज्ड कॉस्ट इन नॉर्दर्न इंडिया. https://www.researchgate.net/publication/346438772_Socio-Demographic_Condition_of_One_of_the_Most_Marginalised_Caste_in_Northern_India
- राधाकृष्णन, एस. एवं कुमारी, आर. (1989). इम्पैक्ट ऑफ एडुकेशन ऑन सिड्यूल कॉस्ट यूथ इन इंडिया: अ स्टडी ऑफ सोशल ट्रांसफार्मेशन इन बिहार एंड मध्य प्रदेश. इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड गवर्नमेंट, केरल, इंडिया. पृष्ठ-139.
- https://censusindia.gov.in/census.website/
- https://socialjustice.gov.in/common/76750
- https://socialjustice.gov.in/public/ckeditor/upload/62201723632649.pdf